2014-15

कूट सं. : 820147.1-SA, (M)

धर्म शिक्षा

(संकलनात्मक मूल्यांकन - I)

अंक विभाजन तथा उत्तर संकेत

कक्षा - आठवीं

अधिकतम अंक : 90

निर्देश : यदि कोई ऐसा सही उत्तर, जो परीक्षार्थी ने लिखा हो परंतु उत्तर संकेत में सम्मिलित न हो, तो उसके भी यथासंभव अंक दिए जाएँ।

प्रश्न संख्या	उत्तर संकेत	मुख्य बिंदु हेतु अंक	कुल अंक
	खण्ड 'क'		
1.	(ख) अमृत	1	1
2.	(ग) वैदिक	1	1
3.	(ख) ओ३म्	1	1
4.	(क) वेद	1	1
5.	(घ) अशक्त	1	1
6.	(ख) वस्त्र	1	1
7.	(क) संस्कृत	1	1
8.	(घ) अर्थशास्त्र	1	1
9.	(ग) देवनागरी	1	1
10.	(घ) निषिद्ध कर्म	1	1
	खण्ड 'ख'		
11.	कर्म करने पर ही तुम्हारा अधिकार है, / मनुष्य का वश केवल कर्म पर ही है, उसके परिणाम या फल पर नहीं।	2	2
12.	शरीर नष्ट हो जाता है, आत्मा नष्ट नहीं होती।	1+1	2
13.	आयु, विद्या, यश और बल।	½×4	2
14.	डी.ए.वी. की तुलना निरन्तर बहने वाली, पवित्र जल की धारा से की गई है।	2	2
15.	वेद-प्रणीता डी.ए.वी. संस्था को कहा गया है। भाव यह है कि डी.ए.वी. संस्था वेदों से प्रेरणा लेकर चलने वाली है।	1+1	2

प्रश्न संख्या	उत्तर संकेत	मुख्य बिंदु हेतु अंक	कुल अंक
	खण्ड 'ग'		
16.	ओ३म् ध्वज के नीचे सभी धार्मिक लोग सच्चाई के मार्ग पर निडर होकर आगे बढ़ें। वे सही कार्य करें और उनके मन में कोई भय न हो।	3	3
17.	'आत्म बोध' कविता के अनुसार जो मनुष्य इच्छाओं को भुलाकर ईश्वर के ओ३म् अथवा अन्य किसी भी नाम का नियमित रूप से जप करता है, वह विवेकशील बनता है।	3	3
18.	इस यज्ञ में समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए प्रार्थना और प्रयत्न किया जाता है। रसोई के चूल्हे या यज्ञ की अग्नि में अन्न की आहुति देना, चींटियों को आटा, चिड़ियों को चुग्गा या पानी देकर सुखी बनाना इसी यज्ञ में आता है।	3	3
19.	'अस्तेय' का अर्थ है चोरी न करना। जो वस्तु अपनी नहीं, जो अपने परिश्रम से नहीं कमाया, उसे बिना पूछे या बिना मूल्य दिए न लेना।	3	3
20.	यमों के पालन से मनुष्य के व्यक्तित्व में निखार आता है, शरीर स्वस्थ और मन पवित्र बनता है, वह सभी प्राणियों के सुख और कल्याण के लिए तत्पर रहता है। इससे स्वस्थ समाज का निर्माण होता है व सुख, शान्ति और समृद्धि में वृद्धि होती है।	3	3
	खण्ड 'घ'		
21.	गुरु नानकदेव जी ने ओम् को ओंकार कह कर पुकारा है। उन्होंने कहा है- 'एक ओंकार सत् नाम कर्ता पुरख'। ओ३म् का हृदय से जप करने से मनुष्य के पाप उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जैसे आग की चिंगारी पुरानी सूखी घास को जलाकर नष्ट कर देती है।	2+3	5
22.	गायत्री मन्त्र समस्त दुःखों के अपार सागर से पार उतारने वाला है, इसीलिए इसे पापनिवारिणी, दुःखहारिणी आदि कहा जाता है। इसके जप से बुद्धि की मलिनता दूर हो जाती है। महात्मा गाँधी के अनुसार गायत्री मन्त्र का स्थिर चित्त और शान्त हृदय से किया गया जप आपत्तिकाल के संकटों को दूर करने की सामर्थ्य रखता है और आत्मोन्नति में उपयोगी है।	2+3	5
23.	संस्कृत का मौलिक अर्थ है संस्कार की गई भाषा। 'भाषा' के अर्थ में 'संस्कृत' का प्रयोग सर्वप्रथम वाल्मीकि रामायण में मिलता है। जब भाषा का सर्वसाधारण में प्रयोग कम होने लगा और पालि तथा प्राकृत बोलचाल की भाषाएँ बन गईं, तब विद्वानों ने प्राकृत भाषा से भेद दिखाने के लिए इसे संस्कृत भाषा का नाम दिया।	1+1+3	5
24.	संस्कृत प्राचीनतम भाषा है। हमारा प्राचीन साहित्य वेद, उपनिषद् धार्मिक ग्रंथ		

प्रश्न संख्या	उत्तर संकेत	मुख्य बिंदु हेतु अंक	कुल अंक
	आदि सभी संस्कृत में लिखे गये हैं। अपनी प्राचीन संस्कृति को जानने के लिए संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है। संस्कृत जानने से भारत की अन्य भाषाओं को सरलता से सीखा जा सकता है। संस्कृत व्याकरण और अनुवाद के शिक्षण से बुद्धि तेज होती है जिससे गणित आदि विषयों में प्रवेश सुगम हो जाता है। अन्य भाषाओं की अपेक्षा संस्कृत में ज्योतिष, अध्यात्म आदि विषयों का अपार ज्ञान उपलब्ध है।		
25.	हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनने के बाद भी नेहरू जी अंग्रेजी को दस वर्ष की छूट देना चाहते थे। राजर्षि टण्डन अंग्रेजी को छूट दिए जाने के पक्ष में नहीं थे। दोनों ही अपनी बात पर दृढ़ थे। ऐसे में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' व सेठ गोविन्द दास के आश्वासन पर राजर्षि टंडन नेहरू जी की बात मानने को राजी हो गए और अंग्रेजी को पन्द्रह वर्ष की छूट दे दी गई। दस वर्ष बाद पुनः नेहरू जी ने अंग्रेजी बने रहने का विधेयक लोकसभा में पास करवा लिया।	5 5	5 5
	खण्ड 'ङ'		
26.	ओ३म् नाम के जप से होने वाले लाभ इस प्रकार हैं (i) इससे मनुष्य की सभी शुभकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। (ii) मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी सुखों का स्वामी बन जाता है। (iii) वह जीवन संग्राम में कभी निराश नहीं होता। (iv) ओ३म् के जप से वाणी में पवित्रता आती है। (v) रसना रसीली हो जाती है। (vi) मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और वह ब्रह्म को पाता है।	6	6
	अथवा		
	ईश्वर सत् चित् आनन्दस्वरूप अनन्तगुण सम्पन्न सत्ता है। गुणों के अनन्त होने से ईश्वर के अनेक नाम कहे जाते हैं, किन्तु ईश्वर का निज नाम ओम् ही है। इसीलिए इसे सर्वश्रेष्ठ माना गया है। ओम् के अ, उ, म ये तीनों अक्षर सृष्टि के प्रारम्भ, मध्य और अन्त के प्रतीक हैं। भाव यह है कि ईश्वर ने सृष्टि को उत्पन्न किया है, वही इसका पालन करता है और अन्त में वह ही इसे समेट लेता है।		
27.	गायत्री मन्त्र - ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। गायत्री मन्त्र का जप तभी फलीभूत होता है जब पहले इसके अर्थ हृदय में	6	6

प्रश्न संख्या	उत्तर संकेत	मुख्य बिंदु हेतु अंक	कुल अंक
	धारण कर लिए जाएँ और गायत्री मन्त्र के अनुसार अपना चरित्र भी बनाया जाए अर्थात् गायत्री मन्त्र साधक के जीवन में ओतप्रोत हो जाए।	3+3	6
	अथवा		
	गायत्री मन्त्र का प्रारम्भ परमेश्वर के निज नाम 'ओ३म्' से होता है। इसमें ईश्वर को प्राणों का भी प्राण, सब दुःखों को छुड़ाने वाला, स्वयं सुखस्वरूप और सब सुखों की प्राप्ति कराने वाला, जगत् की उत्पत्ति करने वाला, सूर्यादि प्रकाशकों का भी प्रकाशक, समस्त ऐश्वर्यों का दाता, क्लेशों का भस्म करने वाला आदि कहकर स्तुति की गई है। यह प्रार्थना की गई है कि इस प्रकार के शुद्ध और पवित्र स्वरूप वाले परमात्मा को हम अपने भीतर धारण करें। ईश्वर हमारी बुद्धि और कर्म को प्रेरित करे, सही मार्ग दिखाए।	6	6
28.	महर्षि दयानन्द ने गुजराती होते हुए भी हिन्दी को अपनाया और हिन्दी में ही अपने ग्रन्थ लिखे। उन्होंने हिन्दी को आर्यभाषा के नाम से पुकारा और सभी देशवासियों को इसे पढ़ने की सलाह दी। उनके पश्चात् आर्य समाज ने हिन्दी के प्रचार के लिए अनथक कार्य किया। हिन्दी में समाचार पत्र और पत्रिकाएँ निकालीं। दक्षिण भारत फिजी, मॉरिशस और अफ्रीका में भी हिन्दी का प्रसार किया। हिन्दी साहित्य के निर्माण में भी आर्य विद्वानों ने प्रशंसनीय योगदान दिया।	6	6
	अथवा		
	हिन्दी भारत में अन्य सभी भाषाओं की तुलना में सबसे ज्यादा बोली व समझी जाने वाली भाषा है। यह किसी एक क्षेत्र की भाषा न होकर समूचे देश की भाषा है। अन्य भाषाएँ अपने विशिष्ट क्षेत्रों में ही बोली समझी जाती हैं। श्री राहुल सांस्कृत्यायन ने प्रमाणपूर्वक सिद्ध किया है कि आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व भी यह सारे देश की सम्पर्क भाषा थी। राष्ट्रीय एकता की भावना के लिए, देशवासियों में परस्पर प्रेम, सहवास और संगठन के लिए एक दूसरे की बात समझना आवश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति केवल हिन्दी भाषा के द्वारा हो सकती है। अतः यह राष्ट्रीय एकता का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।	6	6
29.	देवयज्ञ में अग्नि के तीन रूप हो जाते हैं पहला रूप वह राख है जो अग्नि शान्त होने के पश्चात् हवन कुंड में रह जाती है। दूसरा रूप आहुति में डाली गई वस्तुओं की सुगन्ध और उनका गुण है। यह रूप सूर्यमण्डल में फैल जाता है और इससे अग्नि, जल, वायु आदि सभी		

प्रश्न संख्या	उत्तर संकेत	मुख्य बिंदु हेतु अंक	कुल अंक
	देवताओं को शक्ति मिलती है। आहुति का तीसरा रूप यज्ञ करने वाले के सूक्ष्म शरीर से लिपट कर श्रद्धा और विश्वास के रूप में आत्मा को सुख देने वाले लोकों में ले जाता है।	6	6
	अथवा अतिथि यज्ञ चौथा महायज्ञ है। यदि कोई व्यक्ति बिन बुलाए, बिना सूचना दिए, अपरिचित रूप में घर आ जाए तो उसका स्वागत-सत्कार करना, उसे खाने व पीने को देना अतिथि यज्ञ कहलाता है। यह भारतीय संस्कृति का उज्ज्वलतम चिह्न है। राजा रन्तिदेव इस यज्ञ के आदर्श माने जाते हैं। चालीस दिन भूखे रहकर भी वे अतिथि सत्कार से विरत नहीं हुए। उन्होंने इसके लिए किसी फल की कामना नहीं की। केवल दुःखी लोगों के दुःख दूर कर सकने का वर माँगा।	3+3	6
30.	अहिंसा का अर्थ है मन, वचन और कर्म से किसी प्राणी को कष्ट न देना। सामान्यतः 'अहिंसा' से किसी को शारीरिक हानि न पहुँचाने का ही अर्थ ग्रहण किया जाता है, परन्तु इसका वास्तविक सम्बन्ध मन की भावना से है। रोगी के प्राणों की रक्षा के लिए यदि एक कुशल डॉक्टर उसका ऑपरेशन करता है, तो इसे हिंसा नहीं कह सकते क्योंकि यह कार्य पवित्र मनोवृत्ति से किया गया है। इसी प्रकार युद्ध में देश के शत्रुओं का विनाश करना भी क्षत्रिय के लिए उसका कर्तव्य ही है, इसे हिंसा नहीं कहेंगे।	6	6
	अथवा आँख, कान, नाक जिह्वा, त्वचा, मन आदि इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना ही 'ब्रह्मचर्य' कहलाता है। ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शक्ति से प्रभु को पाने में समर्थ होता है। ऐसे व्यक्ति से समाज में संयम, मर्यादा व अनुशासन बने रहते हैं। ब्रह्मचर्य से शरीर सुन्दर व स्वस्थ बनता है, मन स्वच्छ व सन्तुलित बनता है, बुद्धि तेज होती है और आत्मा बलवान् बनती है।	2+4	6